Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/227
Peer Reviewed & Refereed Journal, Jan-Feb 2024, Vol- 12/81
https://doi.org/10.5281/zenodo.10825094

उत्तराखण्ड के लोक काव्य में हिमालयी चेतना

डॉ० लक्ष्मी नौटियाल

असिस्टेन्ट प्रोफेसर (हिन्दी), राठ महाविद्यालय, पैठाणी पौडी (गढ़वाल)

हिमालय के पाँच खण्डों में से एक केदारखण्ड तथा दूसरा कूमार्चल माना गया है, जो शताब्दियों की यात्रा करने के बाद आज हमारे सामने गढ़वाल तथा कूमायूं क्षेत्र के रूप में दिखायी देते हैं। उत्तराखण्ड की जनता के संघर्षों का ही फल है कि आज कुमायूं और गढ़वाल मिलकर एक पृथक पर्वतीय राज्य का दर्जा प्राप्त कर चुका है, जो उत्तराखण्ड राज्य के नाम से प्रख्यात है। राज्य बनने के बाद इस प्रदेश की सांस्कृतिक, आर्थिक, भौगोलिक धार्मिक और सर्वांगीण विकास की दृष्टि से पुनः निरीक्षण, परीक्षण की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

गढ़वाल हिमालय अपनी विशिष्ट भौगोलिक प्रकृति, संस्कृति, आचार, विचार आदि के कारण मानव जाति की उत्पत्ति के समय से ही अत्यन्त महत्व रखता है। गढ़वाल के साथ हिमालय का जुड़ाव ही गढ़वाल की भौगोलिक महत्ता को प्रतिपादित करता चला आया है। गढ़वाल तथा कुमायूं क्षेत्र को उत्तराखण्ड इलावृत्त, ब्रहमपुत्र, रूद्र हिमालय , चुल्ल ,हिमवत आदि नामों से जाना जाता है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों में ऋग्वैदिक आर्यों के साथ हिमालय की चोटियों का उल्लेख शुरू हो गया था। गंगा, यमुना, अलकनन्दा, मंदाकिनी आदि नदियों का यशोगान आर्य कालिन सभ्यता में मिलता है। भारतवर्ष में आर्य जहां से भी आये, उनका मूल भारत ही था. किन्तु यहाँ यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि भारतीय आर्य सभ्यता और संस्कृति के प्रबल साक्षी गढवाल के पर्वत, नदी, नाले, ताल, मंदिर, धार्मिक स्थल, गुफाये और हिमालय आदि है।

डा० शिवानन्द नौटियाल जी ने स्वीकार किया है कि "भारत के प्राचीन साहित्य एंव इतिहास में गढ़वाल को स्वर्ग भूमि, तपोभूमि, उत्तराखण्ड, बद्रिकाश्रम ,ब्रहम और रूद्र हिमालय आदि कई नामों से जाना जाता है । भारतीय जन जीवन में गंगा यमुना और हिमालय पूरी तरह से छायें हुए है।"

स्पष्ट है कि जब हिमालय की व्यापकता में भारत की विशालता तथा भारत देश का अस्तित्व गौरावान्वित होता है, तो हमारा यह गढ़वाल तथा कुंमायूं क्षेत्र समूचे भारत के लिए गौरव का प्रतीक स्वयम ही बन जाता है। गढ़वाल हिमालय के नाम से विख्यात हमारा यह क्षेत्र अप्रतिम है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विश्वविख्यात पर्वतारोही डी० जी० लॉग स्टाफ ने लिखा है हिम प्रदेश की छः यात्रायें करने के पश्चात मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि एशिया के समस्त पर्वतीय प्रदेशों में गढ़वाल सबसे सुंदर है। न तो काराकोरम की बीहड़ प्राकृतिक छटा, न एवरेस्ट की एकाकी विशालता और न ही हिमालय के दूसरे भुभाग गढ़वाल से समानता कर सकते हैं। पर्वत श्रृंग एंवम घाटियां, वन तथा मखमली घास (बुग्याल) के मैदान पक्षी, वन्यजन्तु, तितलियां और फूलों की घाटियों आदि की छटा एक ऐसे आंनद की सृष्टि करती है जो कहीं उपलब्ध नहीं है। मानव की आवश्यकताओं का जितना उपभोग यहां के पर्वतों से मिलता है उतना लाभ विश्व के किसी भी अन्य पर्वत से उपलब्ध नहीं होता है। गढ़वाल की चोटियां देवताओं के निवास स्थल हैं। इसीलिए गढ़वाल के तीर्थ स्थान आज भी बीस करोड़ से भी अधिक हिन्दुओं के पवित्र धार्मिक यात्रा के कंन्द्र हैं। हिन्दु देवताओं की गरिमा आज भी गढ़वाल में सबसे अधिक तथा पवित्र रूप में सुरक्षित है।

अनेक दृष्टि से महत्वपूर्ण गढ़वाल क्षेत्र की संस्कृति भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। संस्कृति के अंतर्गत खान-पान, वेश भूषा, परम्परायें, संस्कार, बोली, भाषा, जाति इत्यादि का विशिष्ट महत्व है। गढ़वाल की संस्कृति में लोक गीतों का अत्यन्त महत्व है। यहां के लोकगीत विश्व प्रसिद्ध बद्री केदार धाम तथा महाभारत की पाड़वों की कथा से जुड़े हुए है। पांडव नृत्य इस क्षेत्र का एक पारम्परिक नृत्य है। गढ़वाल की संस्कृति में लोक काव्य के भीतर लोकगीतो का अत्यन्त महत्त्व है। इन गीतों में नृत्यों की भी परम्परा है। डा० गोविन्द चातक ने कहा है.....

" एक विचित्र सांस्कृतिक परम्परा लिए हुए हिमालय के इस क्षेत्र की एक सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसका हृदय भावुक हैं. वह कई छंदो और स्वरों में गाता है। लोक गीतों को रचने वाली लोक की प्रत्येक सजीव सवाक इकाई हदय से कवि होती है। गढ़वाल, कुमायूं के गायक नर्तक जाति के बेड़ा बादी आदि लोग तो जन्म से ही आशु कवि होते हैं। उन्ही की तरह जागरी, पुरोहित देवता का आह्वान करते हुए भक्ति भाव से अपने संगीत मुखर स्वरों में काव्य की सृष्टि कर जाते हैं। यहाँ के नर-नारियों का बहुमुखी अनुभूत सत्य कभी लोक कथाओं में उभरता हैं तो कभी कहावतों में, कभी खेतों में काम करते, जीवन के दुख-दर्द को झेलते वे जीवन को अपना एक अर्थ देते हैं जो उनके मौखिक साहित्य में रूपांतरित होता है।

इस प्रकार गढ़वाल में प्रचलित पंवाडे, बाजुबंद, खुदेङ गीत लिखित साहित्य की भक्ति वीर, श्रृंगार और करूण रस की परम्पराओं को भी मात करते हैं। यहां के खुदेड गीतों में नारी हदय की करुणा एक समुन्नत काव्य बनकर उभरती है, तो वही दूसरी ओर झुमैलों चौफला, जागर गीत आदि में प्रकृति के वैभव की छटा देखने योग्य होती है। कालान्तर में इन्हीं गीतो को लिपिबद्ध किये जाने से वे लोक काव्य की श्रेणी में स्थान पा गयें हैं।

गढ़वाल हिमालय में लोक काव्य के अन्तर्गत प्राचीन एवम आधुनिक लोकगीतकारों के द्वारा समय - समय पर जो संगीतमय रस माधुरी निःसृत हुयी है, उसमें धर्म मंदिर, जाति, व्यवसाय, नृत्य, देवी देवता आदि के साथ यहाँ के प्राकृतिक नैसर्गिक और उपयोगिता मूलक सौंदर्य को आधार बनाकर हिमालय का चितंन बेजोड हैं इस भारतवर्ष की पहचान यदि विश्व में कहीं है तो वह दो घटकों से महत्त्वपूर्ण है प्रथम तो गंगा, यमुना, जैसी सदानीरा नदियां एवम द्वितीय विराट हिमालय की उज्ज्वलतम शोभा।

इस हिमालय और गंगा की स्तुति में वैदिककाल से लेकर आज तक न मालूम कितनी प्रशस्तियां पढ़ी जा चुकी हैं। कालीदास से लेकर मध्यकालीन संत गोस्वामी तुलसीदास, आधुनिक कवियों में जयंशकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, निराला, महादेवी वर्मा तथा बाद के कवियों में दिनकर आदि ने हिमालय के गर्वोन्नत स्वाभिमान को अपनी लेखनी का विषय बनाया । परन्तु जब बात उत्तराखण्ड के लोक काव्य और लोक कवियों की होती है तो हमारा ध्यान बरबस ही हिमालय सन्दर्भित उनकी प्रज्ञा तथा दृष्टिपर केन्द्रित हो जाता है। उत्तराखण्ड के लोक कवियों ने कभी रामलीला के मंचों से, कभी सांस्कृतिक मंचों से तथा कभी अपनी शानदार लेखनी के माध्यम से हिमालय के सौन्दर्य को नाना रंगों से अंलकृत करने में कोई भी कसर नहीं छोडी। किसी लोक कवि की हिमालय सन्दर्भित काव्य पक्तियों में गढ़वाल के ही नहीं अपितु संपूर्ण भारत की चेतना को अंलकृत करने के लिए पर्याप्त है-

हिवाली काठ्यूँ तुम्ही बतावा
जुग जुग बटीक तुम कैकी छांवा ।

(अर्थात हे हिमालय की उच्च श्रृंखलाओं जो गढ़वाल की प्रकृति में अभूतपूर्व सौन्दर्य को लेकर शोभित हो, हमें यह बताओ कि युग-युग से जो तुम यहां मौन साधे खड़ी हो तो तुम किसकी अमानत हो । उद्भव नाता और रिश्ता इस महिमामय गढ़वाल से ही तो बनता है?)

गढ़वाल की नृत्य संगीत शैलियों के बीच ऐसा कोई भी गीत नहीं है जो हिमालय के बिना पूर्णता प्राप्त करता हो । गंगा तथा हिमालय यहाँ के जन-जन में समाये हुए हैं। झुमैलों नृत्य हो अथवा मयूर नृत्य या बासती अथया छोडी नृत्य, खुदेड नृत्य हो, बाजूबंद अथवा लामण या तांदी नृत्य इस के बीच कहीं कहीं हिमालय अपना संगीत छेडता हुआ नजर आता है। किसी अनाम लोककवि द्वारा हिमालय की प्रशस्ति में गाया हुआ गान इस प्रकार है जो मयूर नृत्य शैली के भीतर आता है-

"हॅयू चली डांडयू की चली, हिवाली का पोर
रंगमतु हवे नचण लगे, मेरा मन कु मोर।"

उत्तराखण्ड के लोक जीवन में हिमालय यहाँ के लोकमानस के लिए सतत् प्रेरणा का श्रोत रहा है। गढ़वाल की बहु-बेटियों के करूणा सिंचित भावो में हिमालय और यहाँ की उच्चपर्वत श्रृंखलाएँ एक

महत्तपूर्ण भूमिका में रही हैं। गढ़वाल की करूण विरह वियोगनी नारी मायके की याद में इन्ही पर्वत श्रृंखलाओं से संवाद करती नजर आई है। प्रसिद्ध लोक कवि पंडित तारादत्त गैरोला ने सदेई काव्य में कुछ ऐसा ही वर्णन किया है -

"है ऊँची डाड़यूं तुम निसी जावा,
धनी कुलैयू तुम छोटि हवावा,
मैं ते लगीं च खुद मैतुड़ा की
बाबाजी को देखण देश देवा.. "

(अर्थात हे ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं! तुम ऊँचाई से नीचाई अपनाओं, जिससे मुझे अपने पिता का देश (मायका) सुगमता से दिखायी देने लगे।)

विश्व प्रसिद्ध नंदाराजजात तो सीधे-सीधे हिमालय के संदर्भ से ही जुड़ी है। गढ़वाल के लोक में हिमालय की पुत्री पार्वती को ही कहीं-कहीं नंदा घोषित किया गया है। जो शिव से ब्याही गयी है। शिव का स्थान भी कैलाश में ही स्थित है। अतः यहां के लोकगीतों में नंदा भी हिमालय से जुड़े कई आयामों को समाधान देती हुई चली है। यह हिमालयी चेतना का ही रूप है।

हिमवान और पार्वती नंदा की प्रज्ञा लोक गीतों में एक मौलिक रूप में देखायी देती है। जहां उसके पिता उसके विवाह में सोने -धोंदी के खम्भों (स्तम्भ) से युक्त मंडप (हिंदी) बनाना चाहते हैं, किन्तु यह पृथ्वी लोक के प्राणियों का ध्यान रखते हुए अपने पिता को मिट्टी से निर्मित मंडप (वेदी) बनाने की सलाह देती हुई उसे केले तथा कुलायी (चीड के वृक्ष) के खम्भों (स्तम्भ) से सजाने को कहती है।

आधुनिक लोकगीतकारों के बीच श्री नरेन्द्र सिंह नेगी ने हिमालय और गंगा के पर्यावरणीय महत्व को जानकर उसके सौंदर्य को रंग-बिरंगें बिम्बों से सजाया है।

उदारहणार्थ वे कहते हैं, कि जैसे ही सूर्य की पहली किरण का आगमन होता है, उत्तराखण्ड की हिम श्रृंखलाएं धूप से चमचमाने लगती है, और देखते ही देखते सफेद हिम श्रृंखलाएं कुछ स्वर्णिम और कुछ चांदी के रंगों में रंग जाती है-

"चम चमकी घाम डाड्यूँ मा,
हिंवाली कॉठी चाँदी की बणी गेनी।""

अतः कहा जा सकता है कि आज वर्तमान युग में जब हिमालय बचाओ, नदियां बचाओ आदि का विश्व जनित नारा चारों तरफ सुनायी दे रहा है । तब उत्तराखण्ड के लोक साहित्य एवं लोक कवि का कर्म और कवि धर्म निश्चित रूप में आदरणीय एवं प्रशंसा के योग्य हैं कि वे एक सचेतन कवि के रूप में हिमालय की प्रशस्ति गाते हुए अपने जीवन को गौरवान्वित करते जा रहे हैं ।

सन्दर्भ

1. डॉ० शिवानंद नौटियाल, गढ़वाल के लोक नृत्य गीत पृष्ठ सं० -2

2- डॉ० शिवानंद नौटियाल (वक्तव्य) डॉ०डी० जी० लॉग स्टाफ ग० के लोक नृत्य गीत पृष्ठ सं० -1

3 डॉ० गोविन्द चातक, भारतीय लोक संस्कृति संदर्भ, मध्य हिमालय पृष्ठ 9

4 पौडी के रामलीला मंच से लोक कवी मन्ना बाबूजी की हिमालय संदर्भित वाणी

5 लोक में निःसृत गीत

6 प० तारादत्त गैरोला (सदेई काव्य)

7 नरेन्द्र सिह नेगी, खुचकंडी, पृष्ठ 21

Cite Your Article as

R. LAKSMI NAUTIYAL. (2024). UTTRAKHAND KE LOK KAVYA MAIN HIMALYAI CHETNA. Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language, 12(81), 150–154. https://doi.org/10.5281/zenodo.10825094